इकाई 10 संघ और संस्थाएँ*

संरचना

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 संघ का अर्थ और परिभाषा

10.3 संघ के मुख्य लक्षण

10.4 संस्थाओं की परिभाषा

10.4.1 संस्थाओं का उद्देश्य

10.4.2 संस्थाओं के प्रकार

10.5 सामाजिक संस्थाओं के परिप्रेक्ष्य

10.5.1 प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य

10.5.2 संघर्ष के परिप्रेक्ष्य

10.5.3 अन्तःक्रियात्मकतावादी परिप्रेक्ष्य

10.6 सारांश

10.7 संदर्भ

10.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप समझ पाएंगे :

- संघ और संस्थाओं के अर्थ को समझ सकेंगे;
- संघ और संस्थाओं में भेद कर सकेंगे;
- संघ की विशेषताएँ जान पाएंगे;
- संघ की अवधारणा रुचि, समुदाय और संस्था से कैसे भिन्न है?;
- अपने सामाजिक जीवन के भिन्न प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक संघ के महत्व को समझ सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के संस्थाओं की पहचान कर सकेंगे; तथा
- संस्थाओं के दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

जैसा कि हम जानते हैं कि लोगों की अलग–अलग जरूरतें और इच्छाएँ होती हैं। नतीजतन वे उन जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए विभिन्न तरीकों को भी अपनाते हैं। वे स्वतंत्र रूप से अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं या किसी के हितों की रक्षा के लिए दूसरों के साथ संघर्ष कर सकते हैं। लेकिन वे एक–दूसरे का सहयोग करके भी अपनी जरूरतों को पूरा करते हैं। वास्तव में यह यह सहकारी प्रयास है और एक व्यक्ति की आपसी सहायता से सामूहिक के सिरों की पूर्ति होती है। जब एक समूह एक विशेष रुचि के आसपास स्पष्ट रूप से संगठित होता है, तो एक संघ का जन्म होता है। संघ एक प्रकार

* स्मृति सिंह और शुस्वी के परामर्शदाता स्वतंत्र विदुषी

का सामाजिक समूह है जो आधुनिक जटिल समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। संघों को पहले के सामाजिक स्वरूपों में जाना जाता था लेकिन आधुनिक औद्योगिक समाज में सामाजिक समूह के रूप में संघ की प्रकृति पहले की तुलना में भिन्न है। जैसे–जैसे समाज को और अधिक जटिल लोगों की जरूरतें मिलती हैं और दिलचस्पी भी बढ़ती जाती है। रुचि या उपयोगिता अधिक जटिल समाजों में वर्चस्व कायम करती है और जीवन के हर क्षेत्र को निर्धारित करने लगती है। इसलिए, सामाजिक रूप से बोलने वाले समूह जो संगठित तरीके से कुछ निर्दिष्ट नियमों और विनियमों के माध्यम से लोगों के हितों की रक्षा और बढ़ाने के लिए स्थापित किए जाते हैं, संघ कहलाते हैं।

संस्थाएं उन नियमों का समूह हैं जो सामाजिक संपर्क (जैक नाइट, 1992) की संरचना करते हैं। संस्थाओं को आचार संहिता या मानव गतिविधि के लिए नियमों और दिशानिर्देशों के एक समूह के रूप में समझा जा सकता है। वे निर्धारित या निहित नियमों के माध्यम से मानव अंतःक्रिया की संरचना करते हैं जो उम्मीदों को निर्धारित करते हैं। संस्थानों के कुछ उदाहरण कानून, शिक्षा, विवाह और परिवार हैं।

10.2 संघ का अर्थ और परिभाषा

कुछ प्रमुख समाजशास्त्रियों ने संघ को परिभाषित किया है :

- आर.एम. मैकाईवर के अनुसार, कुछ हितों की एक सामूहिक लक्ष्य या हितों के एक समूह के लिए सुविचारित एक संगठन, जिसे इसके सदस्य साझा करते हैं।
- मॉरिस गिन्सबर्ग के अनुसार, संघ एक दूसरे से संबंधित सामाजिक प्राणियों का एक समूह है जो इस तथ्य से संबंधित है कि उनके पास एक विशिष्ट प्रयोजन या विशिष्ट लक्ष्य हासिल करने की दृष्टि से एक आम संगठन है या उसे स्थापित किया गया है।
- एक संघ एक हित या आम हित के समूह की खोज के लिए आयोजित एक समूह है।

इसलिए, मनुष्यों के अलग-अलग हित हैं और वे उन्हें पूरा करने के लिए विभिन्न संघों की स्थापना करते हैं। कोई एकल संघ व्यक्ति या व्यक्तियों के सभी हितों को संतुष्ट नहीं कर सकता है।

10.3 संघ के मुख्य लक्षण

उपरोक्त परिभाषाओं से संघों की कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

संघ दृएक मानव समूह : यहाँ समूह शब्द का अर्थ सामाजिक मनुष्य का संग्रह है जो एक दूसरे के साथ विशिष्ट सामाजिक संबंधों को साझा करते हैं। समूह के रूप में जो अपने सदस्यों के बीच पारस्परिकता को संदर्भित करता है। इसलिए, यहां एक समूह के रूप में संघ स्पष्ट रूप से एक विशेष रुचि के साथ सफतौर पर संगठित किया जाता है। प्राथमिक और गौड़ समूहों या वर्ग और भीड़ जैसे अन्य सामाजिक समूहों से सामाजिक समूह के रूप में स्पष्ट रूप से संगठित संघ का विचार अलग है।

सामान्य रुचियां : यह केवल व्यक्तियों का संग्रह नहीं है, बल्कि संघ के हित पहलू के रूप में एक अलग सामाजिक समूह के रूप में जुड़ता है। क्योंकि संघ विशेष उद्देश्यों के लिए संगठित किया जाता है, विशिष्ट हितों की खोज के लिए, हम इन हितों के आधार पर संबंधित हैं। इस प्रकार, रुचियां वह मूलभूत गुण हैं जिसके चारों ओर विभिन्न प्रकार के संघ बनते हैं।

एक संगठन के रूप में संघ : संघ किसी प्रकार के संगठन को दर्शाता है। एक संघ अनिवार्य रूप से एक संगठित समूह के रूप में जाना जाता है। संगठन का चरित्र एक संघ को स्थिरता और उचित आकार देता है। एक संगठन के रूप में संघ का विचार भी इस बात को निर्धारित करता है कि इसके सदस्यों के बीच स्थिति और भूमिकाएं किस प्रकार वितरित की जाती हैं।

संबंधों का विनियमन : प्रत्येक संघ के अपने सदस्यों के व्यवहार और संबंधों को विनियमित करने के अपने तरीके और साधन हैं। इसलिए, वे कुछ नियमों और विनियमों को बनाते हैं जो लिखित या अलिखित रूपों में हो सकते हैं।

सहायोगी भावना : संघ की एक विशेषता इसके हितों को पूरा करने के लिए सहयोगी भावना है। यह सहयोगी खोज किसी अजनबी की मदद करने की पेशकश के रूप में सहज हो सकती है। यह आकस्मिक हो सकता है या वास्तव में किसी समुदाय के रीति-रिवाजों द्वारा निर्धारित या निर्देशित किया जा सकता है जैसे कि किसानों द्वारा फसल समय पर अपने पड़ोसियों की सहायता करने के मामले में आता है। लेकिन वास्तव में संघ को समूह के सदस्यों के सामान्य हितों द्वारा निर्देशित किया जाता है।

सदस्यता स्वैच्छिक है : संघ में सदस्यता स्वैच्छिक है। यह उनकी रुचि के अनुसार व्यक्तिगत पसंद पर निर्भर करता है। वास्तव में व्यक्ति उनसे जुड़ने के लिए स्वतंत्र हैं। परिषद्यता के लिए एक सामाजिक क्लब में, आजीविका या मुनाफे के लिए एक व्यवसाय को , शारीरिक मनोरंजन या खेल के प्रयोजनों के लिए एथलेटिक क्लब में शामिल हो सकते हैं। इसलिए, एक संघ में सदस्यता का सामाजिक सीमित महत्व है।

अभिकरण (शाखा) के रूप में संघ : संघ साधन या एजेंसियां हैं जिनके माध्यम से उनके सदस्यों को उनके समान या साझा हितों का एहसास होता है। ऐसे सामाजिक संगठन आवश्यक रूप से न केवल नेताओं के माध्यम से बल्कि अधिकारियों या प्रतिनिधियों के माध्यम से एजेंसियों (अभिकरण) के रूप में कार्य करते हैं। एक तरह से एसोसिएशन(संघ) आम तौर पर एजेंटों के माध्यम से कार्य करती है जो एसोसिएशन के लिए और उसके लिए जिम्मेदार हैं। यह एक कानूनी इकाई के रूप में संघ का एक विशिष्ट चरित्र भी देता है।

संघ का कॉर्पोरेट (निगम) चरित्र है : सामाजिक संगठन होने के कारण एसोसिएशन के पास संपत्ति या धन हो सकता है जो सामूहिक रूप से संग्रह किया जाता है और व्यक्तिगत सदस्यों से संबंधित नहीं होता है। इसके पास अधिकार और दायित्व, शक्तियाँ और दायित्व होती हैं जो सदस्य व्यक्तियों के रूप में प्रयोग नहीं कर सकते हैं। यह इस अर्थ में है कि कामकाज की अपनी विशिष्ट पद्धति से संबंधित है कि संघ का एक कॉर्पोरेट चरित्र है।

संघ की स्थायित्वता : संघ की प्रकृति स्थायी या अस्थायी हो सकती है। राज्य, परिवार, धार्मिक संगठनों आदि जैसे बड़े पैमाने पर कुछ अधिक स्थायी और मौजूद हैं, हालांकि, कुछ संघ प्रकृति में बहुत अस्थायी हैं।

संघ और समुदाय

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि लोगों की कुछ सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से एक संघ जानबूझकर बनाई गई है। लेकिन एक समुदाय किसी भी विशिष्ट संगठन से अधिक है। वास्तव में संगठन इसके भीतर विकसित होता है। उदाहरण के लिए, व्यापार या चर्च या गांव या शहर या राष्ट्र के साथ क्लब। इस प्रकार, हम एक शहर या एक गांव को एक समुदाय कह सकते हैं लेकिन एक चर्च को नहीं। ये संगठन उस विशेष रुचि को पूरा

करने के संदर्भ में मौजूद हैं जिसके आसपास वे संगठन हैं। इसलिए, एक समुदाय के भीतर कई संघ हो सकते हैं। इसके विपरीत समुदाय एक प्राकृतिक विकास है और विशिष्ट हितों की तुलना में अधिक सामान्य सिद्धांतों द्वारा निर्देशित है। वास्तव में समुदाय कई बड़े संघों की तुलना में अधिक स्वतंत्र और व्यापक है। इसके अलावा, समुदाय में सदस्यता का बंध अधिक खुला है। लेकिन संघ में सदस्यता का सीमित महत्व है। परिणामस्वरूप समुदाय, संघ की तुलना में अपेक्षाकृत बड़ा और अधिक स्थिर होता है।

मैकाइबर के अनुसार, दो प्रमुख सामाजिक संगठन हैं जो संघ और समुदायों के बीच सीमा रेखा मे पड़ सकते हैं वे परिवार और राज्य हैं। उनके अनुसार परिवार ने आदिम और अत्यंत ग्रामीण समाजों में एक समुदाय के रूप में अधिक काम किया है। ऐसे समाजों में परिवार ने आज के परिवार की तुलना में बड़े कार्य किए हैं। इन मामलों में, लोग कठिन परिश्रम करते हैं , खेलते हैं, और यहां तक कि परिवार की कक्ष के भीतर पूरी तरह से पूजा करते हैं। वास्तव में परिवार अपने सदस्यों के पूरे जीवन को परिभाषित करता था। हालांकि, एक अधिक जटिल और सभ्य समाज में परिवार एक संघ के रूप में अधिक कार्य करते हैं। श्रम के सामाजिक विभाजन के बढ़ने से इसके कार्य अधिक से अधिक सीमित और परिभाषित होते जा रहे हैं। लेकिन यहाँ एक बालक के शुरुआती दिनों में भी परिवार सहयोगात्मक कार्य से ज्यादा निष्पादन करता है, लेकिन धीरे-धीरे यह संघ में बदल जाता है, अक्सर तीव्र, लेकिन सीमित रुचि के साथ। अंततः परिवार का वयस्क सदस्य इसे छोड़ देता है और एक नया परिवार स्थापित करता है।

इसी तरह, राज्य का भी एक क्षेत्र है जो अक्सर समुदाय के साथ भ्रमित होता है। हालांकि, मैकाइवर का कहना है कि वास्तव में राज्य सामाजिक संगठन का एक रूप है, न कि पूरे समुदाय के सभी पहलुओं का। जबकि मैकाइवर राज्य के साहचर्य चरित्र के बारे में बात करते हुए कहते हैं कि राज्य विशिष्ट विस्तृत श्रेणी की एजेंसी है, लेकिन फिर भी यह एक एजेंसी है। हालाँकि कई बार राज्य 'निरपेक्षतावादी'या 'अधिनायकवादी' का रूप ले लेते हैं और मानव जीवन के हर पहलू को नियंत्रित करने और परिभाषित करने की कोशिश करते हैं, लेकिन राज्य एक समुदाय नहीं, बल्कि समुदाय को नियंत्रित करने वाला संघ बन जाएगा।

संघ और संस्था

हालाँकि यह समान है, लेकिन सामाजिक रूप से दोनों अवधारणाओं को उनके अर्थ, प्रकृति और कई और तरीकों से अलग-अलग बताया जाता है। हालांकि, यह स्पष्ट करने की आवश्यकता है कि हम संघ में हैं, लेकिन संस्था में नहीं। एक तरह से संस्थाओं को समूह गतिविधि की प्रक्रिया की विशेषता के स्थापित रूपों या शर्तों के रूप में परिभाषित किया जाता है। एसोसिएशन बनाते समय जो कुछ सामान्य हितों के इर्द-गिर्द एक सुविचारित गठन है, उद्देश्य को वितरित करने के लिए नियम और प्रक्रियाएं भी बनाते हैं। इस प्रकार, प्रत्येक संघ की अपनी विशेष रुचि, उसके विशिष्ट संस्थाओं के संबंध में है। उदाहरण के लिए, चर्च में इसके संस्कार, पूजा के तरीके और इसके अनुष्ठान हैं। परिवार में विवाह है, अर्थात, रिश्तेदारी की संस्थाय इसका घर, परिवार का भोजन, और इसके आगे कई चीजें है। राज्य की अपनी विशिष्ट संस्थाएं हैं, जैसे कि प्रतिनिधि सरकार और विधायी प्रक्रियाएं। हालाँकि, हम संघों से संबंध रखते हैं, लेकिन संस्थाओं के नहीं। यह व्यापक रूप से इस विचार को संदर्भित करता है कि जब हम किसी संगठित समूह के रूप में किसी चीज पर विचार करते हैं, तो यह एक संघ है लेकिन जब हम प्रक्रिया के रूप में विचार करते हैं तो यह एक संस्था के रूप में संदर्भित होता है। संघ ने सदस्यता को

निरूपित किया; संस्था एक मोड या सेवा के साधन को दर्शाता है। जब हम एक कॉलेज को शिक्षकों और छात्रों के निकाय के रूप में देखते हैं, तो हम इसके साहचर्य पहलू का चयन कर रहे हैं, लेकिन जब हम इसे एक शैक्षिक प्रणाली के रूप में मानते हैं, तो हम इसकी संस्थागत सुविधाओं का चयन कर रहे हैं। इसलिए, हम एक संस्था से संबंधित नहीं हो सकते। हम शादी या संपत्ति प्रणाली या एकान्त कारावास से संबंधित नहीं हैं, लेकिन हम परिवारों से संबंधित हैं।

10.4 संस्थाओं की परिभाषा

संस्थाएं समाज के ऐसे घटक हैं जो मानव अंतःक्रिया और क्रियाकलापों की संरचना के माध्यम से क्रम और स्थिरता बनाए रखने में मदद करते हैं। संस्थाएँ मानव अंतरू क्रियाओं को ढाँकने वाले नियमों या अधिरचना के संदर्भ में स्वयं को प्रकट करती हैं। वे समाज के उन सदस्यों के माध्यम से कार्य करते हैं जिनका समाजीकरण किया जाता है। यह समाजशास्त्र के क्षेत्र के लिए संस्थानों के अध्ययन को महत्वपूर्ण बनाता है। एमिल दुर्खीम ने समाजशास्त्र को सिद्धांत संस्थाओं के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में संदर्भित किया। धर्म, परिवार, शिक्षा वगैरह जैसे संस्थान अभी भी समाजशास्त्र के अनुशासन के लिएतार्किक ढंग से महत्वपूर्ण हैं।

आइए हम संस्था के अर्थ से परिचित कराने के लिए संस्थाओं की कुछ विद्वानों की परिभाषाओं पर विचार करें :

मॉरिस गिन्सबर्ग (1921) के अनुसार, ''संस्थाएं एक दूसरे या किसी बाहरी वस्तु के संबंध में, सामाजिक प्राणियों के बीच संबंधों के निश्चित और स्वीकृत रूप या तरीके हैं''।

रॉबर्ट मॉरिसन माइकाइवर ने संस्थानों को ''समूह गतिविधि की प्रक्रियाओं के विशिष्ट रूपों या शर्तों के रूप में परिभाषित किया है''।

विलियम ग्राहम समनर (1906ः 53) सुझाव देते हैं कि ''एक संस्था में एक अवधारणा, विचार, धारणा, सिद्धांत या रुचि और एक संरचना होती है''।

ब्रॉनिस्लाव मैलिनोव्स्की का तर्क है कि, ''हर संस्था एक मूलभूत आवश्यकता के इर्द-गिर्द केंद्रित होती है, जो लोगों के एक समूह को सह-संचालन कार्य में स्थायी रूप से एकजुट करती है और इसके विशेष सिद्धांतों और इसकी तकनीक या शिल्प का मुख्य भाग होती है। संस्थाओं को सरल और प्रत्यक्ष रूप से नए प्रकार्यों से सहसंबंधित नहीं किया जाता है। किसी एक संस्था में किसी की संतुष्टि प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है।''

जोनाथन टर्नर संस्था को षविशेष प्रकार की सामाजिक संरचनाओं में दर्ज किए गए पदों, भूमिकाओं, मानदंडों और मूल्यों के जटिलता के रूप में परिभाषित करता है, जो मानव-गतिविधि के अपेक्षाकृत स्थिर ढांचे को गठित करता है, जो जीवन को बनाए रखने के संसाधनों में मूलभूत समस्याओं के संबंध में, लोगों को पुनरू पेश करने और बनाए रखने में है, और एक दिए गए वातावरण के भीतर व्यवहार्य सामाजिक संरचनाओं को स्थिर बनाए रखता है।"(टर्नर 1997ः 6)।

उपरोक्त परिभाषाओं से हमें पता चलता है कि :

1) संस्थाओं का भौतिक अस्तित्व नहीं हो सकता है, बल्कि एक समाज के सदस्यों के व्यवहार के समन्वित पैटर्न में दिखाई दे सकती हैं।

2) संस्थाएँ व्यक्तिगत सदस्यों के व्यवहार को समझाने में मदद कर सकती हैं।

3) संस्थाओं में प्रतिबंधात्मक और सक्षम करने की क्षमता है, क्योंकि यह परस्पर एक व्यक्ति के लिए उपलब्ध विकल्पों को बाधित करती है और उन तरीकों को परिभाषित करती है जिनमें विकल्पों का प्रयोग किया जाना है। ऐसी स्थिति पर विचार करें जिससे दो व्यक्ति विवाह की संस्था में एक साथ जीने का फैसला करते हैं और दोनों एक दूसरे के साथ रहने की इच्छा को परिभाषित करने के तरीके को परिभाषित करते हैं।

4) संस्थाएं समाज के सदस्यों के बीच एकजुटता बनाने और आगे बढ़ाने का कार्य करती हैं।

5) यह सदस्यों के बीच परस्पर अन्तःक्रिया को संरचित करता है।

मानदंडों और प्रतिबंधों के माध्यम से संरचित व्यवहार के नियमित और सुसंगत ढांचे के संदर्भ में संस्थाओं की पहचान की जा सकती है। जबकि प्रकट व्यवहारों को संस्था के अवलोकनीय रूप में पढ़ा जा सकता है। संस्थाओं को मात्र संयोजित व्यवहार हेतु कमतर नहीं किया जा सकता हैय यदि संबंधित व्यवहार बाधित हो जाता है, तो इसका मतलब यह नहीं हो सकता है कि संस्था का अस्तित्व समाप्त हो गया है। ऐसी कोई स्पष्ट सीमाएँ नहीं हैं जो मानदंडों और संस्थाओं के बीच खींची जा सकती हैं, लेकिन संस्थाएँ इस मायने में अलग हैं कि वे सुसंगत और सामान्यीकृत मानक अपेक्षाएँ हैं। इन आदर्शवादी सामाजिक अपेक्षाओं को आवश्यक रूप में देखा जाता है और ये विकृति के विरुद्ध मजबूत प्रतिबंधों के पूरक हैं। उदाहरण के लिए, प्रजनन के जैविक तथ्य को विवाह और परिवार में संस्थाओं के रूप में संस्थागत किया गया है। शादी और परिवार के स्वीकृत संस्थाओं के बाहर मानव प्रजनन सामान्य हतोत्साहित करता है और कुछ मामलों में, एक मजबूत प्रतिक्रिया देखने को मिलती है । इसलिए, संस्थाएं उन सामाजिक भूमिकाओं को निर्दिष्ट और परिभाषित करना चाहती हैं जिन्हें किसी विशेष समाज के सदस्यों को पूरा करना चाहिए और उनका पालन करना चाहिए। इसलिए संस्थाओं को इस तरह की भूमिकाओं के एक समूह के रूप में समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, परिवार की संस्था एक विषमलैंगिक पुरुष से कुछ भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को अपनाने की अपेक्षा करती है और विषमलैंगिक महिला को अन्य भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को अपनाने के लिए कहती है। एक परिवार में बच्चों की सामाजिक रूप से परिभाषित भूमिकाएं और जिम्मेदारियां भी होती हैं। हालांकि, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का ऐसा परिसीमन अंतिम और पूर्ण नहीं है। कामुकता और श्रम के विभाजन पर श्पुरुषश और श्महिलाश की भूमिकाओं के बारे में अपनी धारणाओं के लिए परिवार संस्था पर हमला किया गया है।

संस्था तभी अच्छी तरह से कार्य करते हैं जब वे अपेक्षा, विचार और क्रिया के स्थिर पैटर्न को बनाए रखते हैं। इन तत्वों के बीच संगति और समाकरण (सिंक्रनाइजेशन) संस्था की स्थिरता को निर्धारित करते हैं। अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि संस्थाओं में गुणों की तरह संतुलन होता है, उस समय, जब बाधित संस्था उद्देश्य या वरीयता के रूप में आदेश को मजबूत करके अपनी स्थिरता को बहाल करती है। बार-बार और सुसंगत व्यवहार जिसमें नियम–जैसे गुण होते हैं, मानक महत्व को मानते हैं और उन तरीकों से कार्य करते हैं जो संस्था के संतुलन की स्थिति को स्थिर करते हैं।

समाजशास्त्री संस्थानों को विलक्षण रूप से स्थिर घटना नहीं बल्कि प्रक्रिया मानते हैं। संस्थानों को संस्थागतकरण, डी-संस्थागतकरण और पुनरूसंस्थागतकरण की प्रक्रियाओं के संदर्भ में समझा गया है। उन्हें आम तौर पर ''सामाजिक जीवन की अधिक स्थायी

विशेषताओं'' के रूप में माना जाता है (गिडेंस,1984: 24)।

शब्द की उत्पत्ति

यह शब्द अर्थशास्त्र में इसके उपयोग के माध्यम से लोकप्रिय हो गया, जहां इसने अन्य सदस्यों द्वारा उपयोगिता अतिवादीकरण के समानांतर प्रयासों के कारण उपयोगिता अतिवादीकरण के मानव प्रयास पर अड़चनें पैदा कीं। दो अर्थशास्त्री जो इसके उपयोग से जुड़े हैं, वे हैं ऑलिवर विलियमसन और डी.सी. नॉर्थ। जैसा कि आप देख सकते हैं कि अर्थशास्त्र में इसका उपयोग समाजशास्त्र में इसके उपयोग से काफी अलग है। जबकि, अर्थशास्त्र में शब्द का उपयोग समाजशास्त्र के लिए बहुत कम महत्व रखता है, संस्थाओं की समाजशास्त्रीय अवधारणा, संस्थागत परिवर्तन और संस्थागतकरण अर्थशास्त्र के अनुशासन के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं। अर्थशास्त्र के लिए, समाजशास्त्रीय अर्थ में संस्था व्यक्तिगत व्यवहारों की भविष्यवाणी और व्याख्या करने में मदद कर सकती है। अर्थशास्त्र में इसके मूल उपयोग के विपरीत, कोई भी संस्था के समझ की शुरूआत कर सकता है और व्यक्तिगत व्यवहार को समझ सकता है, जो कि संस्था की समाजशास्त्रीय अवधारणा बताती है।

अर्थशास्त्र में इसके प्रारंभिक उपयोग के बाद, यह शब्द फिर समाजशास्त्र में फैल गया। पहले समाजशास्त्री शब्द के प्रयोग का श्रेय हर्बर्ट स्पेंसर को है। स्पेन्सर ने सुझाव दिया कि समाज एक संगठित शरीर है और संस्थाएँ समाज के सभी अंग हैं।

10.4.1 संस्थानों का उद्देश्य

जर्मन समाजशास्त्री अर्नोल्ड गेहलेन (1980) ने सुझाव दिया कि मनुष्य एक सांस्कृतिक दुनिया के साथ अपनी सहज दुनिया को पूरक बनाना चाहता है। उनका सुझाव है कि अपूर्णता की यह भावना और पूरक बनाने की कोशिश संस्थाओं के उद्भव की व्याख्या करती है। अपनी पुस्तक 'वास्तविकता का सामाजिक निर्माण'(1967) में थॉमस लुकमैन ने इस विचार को विस्तार दिया और सुझाव दिया कि मनुष्य अपने जैविक अविकसितता की भरपाई स्वयं एक सामाजिक छत्र या धर्म के साथ करते हैं। इसलिए संस्थाएं मानव को उनके प्राकृतिक वातावरण से जोड़ने के माध्यम से मानव जीवन को सार्थक बनाती हैं।

10.4.2 संस्थाओं के प्रकार

समाजशास्त्री आमतौर पर संस्थाओं को प्रमुख संस्थानों के पाँच समूहों में वर्गीकृत करते हैं। वो हैं :

- **आर्थिक संस्थान** : ये वे संस्थान हैं जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, उपभोग और वितरण के अनुरूप हैं।
- **सामाजिक स्तरीकरण की संस्थाएँ** : ये ऐसी संस्थाएँ हैं जो सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा के भेदक पहुँच को विनियमित और नियंत्रित करती हैं।
- **रिश्तेदारी, विवाह और परिवार** : ये संस्थान प्रजनन को विनियमित और नियंत्रित करते हैं।
- **राजनीतिक संस्थाएँ** : वे सत्ता के नियमन और वितरण से संबन्धित हैं।
- **सांस्कृतिक संस्थाएँ** : वे धार्मिक, प्रतीकात्मक और सांस्कृतिक प्रथाओं को विनियमित करती हैं।

10.5 सामाजिक संस्थाओं पर परिप्रेक्ष्य

सामाजिक संस्थान व्यवस्थित विश्वास और प्रतिमान हैं जो बुनियादी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर केंद्रित हैं। इन सामाजिक जरूरतों को समाज के सदस्यों (प्रजनन और परिवार) के प्रतिस्थापन और संरक्षण आदेश से संबंधित होना चाहिए। सामाजिक संस्थाएं समाज की संरचना में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, रिश्तेदारी और अनाचार के आसपास के प्रतिमान और मान्यताएं समाज की संरचना को समझने में मदद करती हैं। समाज की संरचना उन बाधाओं के माध्यम से स्पष्ट हो जाती है जो इन प्रतिमानों के साथ-साथ समाज के सदस्यों के हितों की सेवा करने के लिए उनके अनुकूल विशिष्टता को भी अनिवार्य करते हैं।

सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन समाजशास्त्रियों द्वारा विभिन्न तरीकों से किया गया है। जबकि कुछ सामाजिक संस्थाओं को तार्किक (महत्वपूर्ण) भाग मानते हैं जिसे समग्र समाज के लिए अच्छी तरह से कार्य करना चाहिए, अन्य लोग सामाजिक संस्थानों को एक यथास्थिति स्थापित करने के रूप में देख सकते हैं जो कि इष्टतम परिस्थितियों में वैमनस्य का कारण बनती हैं। नीचे हम इनमें से कुछ दृष्टिकोणों को देखते हैं। ये सभी दृष्टिकोण सामाजिक संस्थाओं के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं जो सामाजिक संस्थाओं की हमारी समझ को गहरा कर सकते हैं।

10.5.1 प्रकार्यात्मकवादी परिप्रेक्ष्य

कार्यात्मकवादी दृष्टिकोण उस भूमिका और सेवाओं पर प्रकाश डालता है जो संस्था वृहत्तर समाज के संबंध में निभाता है। कार्यात्मक दृष्टिकोण संस्था को एक संपूर्ण समाज के हिस्से के रूप में देखता है। एक संस्था के मूल्य को मुख्यतः समाज की समग्र भलाई के लिए सेवाप्रदान करने के रूप मे समझा जाता है। प्रकार्यात्मकवादी परिप्रेक्ष्य का सुझाव है कि सामाजिक संस्थाएं पांच तरीकों से समाज की जरूरतों को पूरा करती हैं। एक समाज की प्रकार्यात्मक आवश्यकताएं जो संस्थाएँ पूरा करती हैं

1) कर्मियों का प्रतिस्थापन जो समाज उम्र बढ़ने, बीमारी, युद्ध या प्रवास के कारण मृत्यु के परिणामस्वरूप खोता है। यह आव्रजन, अनुलग्नक या यौन प्रजनन के माध्यम से नए सदस्यों को जोड़ने से किया जाता है।

2) नए सदस्यों का समाजीकरण और शिक्षा।

3) समाज के सदस्यों के बीच माल और सेवाओं का उत्पादन, संचलन और वितरण।

4) समाज के आदेश को विघटन के साथ धमकी देने वाले बाहरी हमलों के खिलाफ बचाव के माध्यम से एक साथ दिनप्रतिदिन की अन्तःक्रिया और शासन को एक आदेश प्रदान करना।

5) धर्म, संस्कृति, भाषा, आदि जैसे संघों के प्रति लोगों की निष्ठा बनाने और उनके प्रति निष्ठा रखने की अनुमति देकर अपनेपन और उद्देश्य की भावना को बढ़ावा देना।

10.5.2 संघर्ष के परिप्रेक्ष्य

संघर्ष का दृष्टिकोण कार्यात्मक दृष्टिकोण से सहमत है जहाँ तक यह स्वीकार करना है कि संस्थाएँ समाज की बुनियादी जरूरतों को पूरा करती हैं। हालांकि, संघर्ष के परिप्रेक्ष्य का तर्क है कि संस्थान पदानुक्रम स्थापित करने और यथास्थिति बनाए रखने के लिए काम करते हैं। उदाहरण के लिए, संघर्ष के परिप्रेक्ष्य ने इस बात पर जोर दिया है कि कैसे शिक्षा जैसी बड़ी संस्था ने एक समाज के भीतर शक्तिशाली समूहों को विशेषाधिकार देने का काम

किया है। संघर्ष का परिप्रेक्ष्य आगे जोर देता है कि संस्थान विशेषाधिकार के रखरखाव की दिशा में काम करते हैं। अपेक्षाकृत, संघर्ष का परिप्रेक्ष्य इस बात पर प्रकाश डालता है कि संस्था उन दोनों के लिए बहिष्कृत और दमनकारी है जो संस्थाओं को नुकसान पहुँचाते हैं। उदाहरण के लिए, संघर्ष का दृष्टिकोण जोर देता है कि परिवार की संस्था के भीतर महिलाएं श्रम शोषण का सामना करती हैं। संघर्ष के परिप्रेक्ष्य ने सामाजिक संस्थाओं के जातिवाद, लिंग और समग्र रूढ़िवादी चरित्र पर प्रकाश डाला है। संघर्ष का दृष्टिकोण संस्थाओं द्वारा सन्निहित प्रतिमानों और अपेक्षाओं के निहित मान्यताओं पर हमला करता है। यह संस्थाओं में प्रतीत होने वाले शांत प्रतिमानों के भीतर अनुचित शक्ति वितरण को आगे लाता है।

10.5.3 सहभागितावादी परिप्रेक्ष्य

पूर्व दो (अर्थात, प्रकार्यात्मकवादी पर्सपेक्टिव और संघर्ष पर्सपेक्टिव) के विपरीत इंटरैक्शनिस्ट (सहभागितवादी) परिप्रेक्ष्य, सूक्ष्म ज्ञान में रुचि रखता है कि वास्तविक अन्तःक्रिया में संस्थान कैसी भूमिका निभाते हैं। यह संस्थाओं और रोजमर्रा के व्यवहारोंके ढांचे को कैसे गठित और विशिष्ट बनाता है, इसको अधिगृहीत करना चाहता है। इंटरैक्शनिस्ट परिप्रेक्ष्य का तर्क है कि संस्था हमारे दैनिक अन्तःक्रिया और व्यवहार को फ्रेम(गठित) करते हैं। हमारे दिन-प्रतिदिन की अन्तःक्रिया और व्यवहारों को उन भूमिकाओं और स्थितियों से अनुकूलित किया जाता है जिन्हें हम अनुरूप पाते हैं (और स्वीकार करते हैं), जिन समूहों को हमें नियत किया गया है (और निष्ठा का वादा करते हैं) उन संस्थानों के भीतर हम कार्य करते हैं। शिक्षा की संस्था के भीतर एक शिक्षक विशिष्ट तरीकों से अन्तःक्रिया को फ्रेम करता है। यह केवल शिक्षा की संस्था द्वारा परिभाषित छात्रों, अभिभावकों और अन्य हितधारकों (साझेदारों) की भूमिकाओं के संबंध में समझ बना सकता है। शिक्षा संस्थान विभिन्न भूमिकाओं और स्थितियों से अपने महत्व को प्राप्त करता है, जिसे लोग अपनी दिन-प्रतिदिन की अन्तःक्रिया में सुसंगत तरीके से निभाने और पूरा करने के लिए सहमत होते हैं।

10.6 सारांश

इस प्रकार, संघ का गठन मूल रूप से हमारे रोजमर्रा के जीवन में हमारी रुचियों और इच्छाओं को बढ़ाने का एक परिणाम है। जैसा कि समाज संरचना के संदर्भ में यह अधिक से अधिक जटिल हो रहा है, साथ ही साथ इसके प्रकार्य भी अधिक जटिल रूपोंमे उभरते हुए हम गवाह होते हैं। इसके अलावा, एक सामाजिक समूह के रूप में सहयोग को संघर्ष के मुकाबले व्यवस्थित रूप से संगठित नियमों और विनियमों के साथ सहकारी अर्थों में अधि ाक व्यक्त किया जाता है। वास्तव में एसोसिएशन समूह की मानवीय प्रकृति को सिर्फ प्रक्रियाओं और नियमों से दर्शाती है जो कि एक अन्य महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय अवधारणा के स्वरूप में अधिक स्पष्ट है जो कि संस्था है। संस्थाएं दृष्टिकोण, व्यवहार और एक आचार संहिता की अपेक्षाएं हैं जिन्हें व्यक्ति पूरा करने के लिए बाध्य महसूस करते हैं। संस्थाओं का कामकाज एक संस्था से जुड़े समझौतों और नियमों को समझने वाले लोगों पर निर्भर है और उनके द्वारा अपना जीवन जीने के लिए बाध्य महसूस करते हैं। विभिन्न प्रकार की संस्थाएं हैं जो समाज के भीतर एकजुटता और सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक इकाइयों के रूप में कार्य करती हैं।

बोध प्रश्न

1) हमारे सामाजिक जीवन में विभिन्न प्रकार के संघों का क्या महत्व है?

2) संघ समुदाय और संस्था से अलग कैसे है?

3) संघ समाजशास्त्रीय अवधारणा कैसे है?

4) संस्थाएँ क्या हैं? विभिन्न प्रकार की संस्थाएँ कौन सी हैं? उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

5) संस्थाओं के प्रकार्यात्मक और संघर्ष परिप्रेक्ष्य के बीच अंतर क्या है?

10.7 संदर्भ

गिडेंस, अंथोनि. 1984, द कोंस्टीच्युशन ऑफ सोसाइटीरूआउटलाइन ऑफ द थियरि ऑफ स्ट्रकचरेशन, कैम्ब्रिजरू पोलिटि प्रेस ।

हंट. चेस्टर एल एंड हार्टन. पाल बी. (2004), सोसिओलोजी, न्यू दिल्ली,टाटा माइकग्रा हिल.

नाइट. जे(1992), इंस्टिच्युशन एंड सोसाइटी कोंफ्लीक्ट, कैम्ब्रिज, एन वाईरूकैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस .

पेज, चार्ल्स एच. एंड मैकाइवर आर. एम (1986), सोसाइटीरू एन इंटरोड़कटरी एनालिसिस, मद्रासः मैकमिलन इंडिया लिमिटेड

टर्नर,जोनाथन,1997, द इन्स्टीच्युशनल ऑर्डर, न्यू यॉकर्रूलॉन्गमैन

वेबर, एम. (1964), द थियरी ऑफ सोशल एंड एकोनोमिक ऑर्गनाईजेशन, न्यू यॉर्क द फ्री प्रैस।